"सौवां अंक"

कथा क्रम

अप्रैल-जून 2024
मूल्य ₹75

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

ISSN-2231-2161

वर्ष : 26 अंक : 100

अप्रैल–जून 2024

संपादक
शैलेन्द्र सागर

संपादन परामर्श
रजनी गुप्त

सहयोग
मीनू अवस्थी

प्रबन्ध सहायक
राम मूरत यादव

संपादन संचालन : अवैतनिक

100वां अंक

कथा क्रम

कथासाहित्य, कला एवं संस्कृति की त्रैमासिकी

(www.notnul.in)

अनुक्रम

संपादकीय

03 'कथाक्रम' : एक चौथाई सदी का सफर, आकांक्षाएं व उपलब्धियां

परिचर्चा

एक : 21वीं सदी : साहित्यिक, सांस्कृतिक परिदृश्य

08 : **मधुरेश**

12 : **मृदुला गर्ग**

14 : **राजेश जोशी**

15 : **कर्मेन्दु शिशिर**

22 : **सुशीला टाकभौरे**

26 : **हरीराम मीणा**

दो हिंदी कहानी : वर्तमान परिदृश्य

69 : **ममता कालिया**

73 : **अलका सरावगी**

74 : **अजय नावरिया**

76 : **मनोज कुमार पाण्डेय**

79 : **कुणाल सिंह**

समय, समाज और साहित्य

29 **रविभूषण** : हम एक खौफ़नाक समय में हैं!

37 **वीरेन्द्र यादव** : जनतंत्र, जातितंत्र और हिंदी मानस

45 **रोहिणी अग्रवाल** : सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धर्म, पितृसत्ता और हिन्दी उपन्यास

56 **प्रेमकुमार मणि** : इक्कीसवीं सदी में भारत

63 **विभास वर्मा** : बदलता साहित्य : चौथाई सदी का ख़ाका

कथा आलोचना

83 **विनोद शाही** : हिन्दी उपन्यास की भारतीयता : 21वीं सदी का आलोचना परिदृश्य

संपादकीय सम्पर्क :
डी-107, महानगर विस्तार, लखनऊ-226006
दूरभाष : 09415243310
e-mail : kathakrama@gmail.com

e-mail : kathakrama@rediffmail.com

इस अंक का मूल्य : 75 ₹

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत त्रैवार्षिक-450 ₹, आजीवन 3000 ₹
संस्थाएं : वार्षिक-200 ₹, त्रैवार्षिक-550 ₹, आजीवन 3500 ₹

(Kathakram SBI, Mahanagar Shakha, Lucknow A/c10059002392 IFSC-SBIN0008189)

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

मुद्रक : प्रकाश पैकेजर्स, प्लाट नं. 755/99 A, गोयला इनडस्ट्रियल एरिया, यू.पी.एस.आई.डी.सी.-देवा रोड, चिनहट, लखनऊ-226019

100वां अंक

आवरण कला : बंशीलाल परमार

रेखाचित्र : राजीव मिश्र

90 **अरुण होता** : इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानी : पृष्ठभूमि और परिदृश्य

96 **शंभु गुप्त** : समय की दीवार पर ख़ून के छींटे!

106 **नीरज खरे** : कहानी आलोचना का वर्तमान

112 **राकेश बिहारी** : नकार की राजनीति और अस्मितावादी पाठ की जरूरत

118 **राजेश राव** : इक्कीसवीं सदी की कहानियों के सामाजिक सरोकार

दलित साहित्य

128 **डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन'** : हिन्दी दलित साहित्य : चौथायी सदी का सफर

136 **कंवल भारती** : हिंदी दलित कथा-साहित्य के तीन दशक

141 **रविकान्त चंदन** : दलित साहित्य के 50 साल

स्त्री विमर्श

147 **बलवन्त कौर** : यौन हिंसा : देह पर, देह से परे

आदिवासी साहित्य

154 **रणेंद्र** : आदिवासी साहित्य : धरोहर और उपलब्धियां

159 **वैभव सिंह** : कहानी, भारतीयता और हाशिया

विदेशी कथा साहित्य

164 **विजय शर्मा** : नई सदी के विदेशी उपन्यास

कथेतर

169 **पल्लव** : नयी सदी में कथेतर

रंगमंच

173 **राजेश कुमार** : हिंदी रंगमंच का सपना और हक़ीक़त

लघु पत्रिकाएं

181 **प्रियम अंकित** : वैचारिक अराजकता और स्वार्थपरता के दौर में लघु-पत्रिका आन्दोलन

तकनीक : साहित्य

185 **प्रमोद रंजन** : कृत्रिम बुद्धिमत्ता : हिंदी के भाषा मॉडलों का भविष्य

जिंदगीनामा

193 **शशिकला रॉय** : 'रिज़्क और जाल की साज़िशें बेपनाह हैं'

सफरनामा

199 **प्रताप दीक्षित** : कथाक्रम : बदलते समय-समाज में सृजनात्मक हस्तक्षेप की यात्रा

संपादकीय

'कथाक्रम': एक चौथाई सदी का सफर, आकांक्षाएं व उपलब्धियां

शैलेन्द्र सागर

पूरी विनम्रता और गर्वानुभूति के साथ 'कथाक्रम' का सौवां अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। पत्रिका की पच्चीस सालों की यात्रा पूर्ण करने पर कुछ नॉस्टेलजिक होना स्वाभाविक है। साहित्यिक पत्रिका निकालने, लेखकों से सहयोग प्राप्त करने, प्रकाशन के लिए संसाधन जुटाने, अपने पद की गरिमा बचाए रखने और पत्रिका की निरंतरता बनाए रखने की चुनौती जैसी कुछ बातें मन में उमड़ घुमड़ रही हैं। पत्रिका का नियमित प्रकाशन अहम होते हुए भी किसी पत्रिका का निकष नहीं हो सकता। वैसे भी किसी उद्यम/परियोजना का एक ही लक्ष्य नहीं होता, उसके विविध रूप व पक्ष होते हैं। स्तरीयता निर्विवाद तौर पर एक अनिवार्य व स्थाई शर्त है जिससे पत्रिका साहित्यिक मापदंडों पर खरी उतरे।

पत्रिका, आखिर क्यूं...

100वां अंक

साहित्यिक पत्रिका या कहूं कहानी की एक स्तरीय पत्रिका निकालने का कीड़ा कब और कैसे मेरी नसों में रेंगने लगा, कहना मुश्किल है। पर एक चीज तो थी ही जिसने मुझे इस दिशा में सोचने पर मजबूर किया। पिछली सदी के आठवें दशक के उत्तरार्ध और नवें दशक के शुरुआती सालों में हिंदी की प्रतिष्ठित और लोकप्रिय पत्रिकाओं का धड़ाधड़ बंद होना....। सारिका, धर्मयुग, साप्ताहिक हिंदुस्तान, दिनमान, निहारिका, रविवार आदि वे पत्रिकाएं थीं जिन्होंने एक लंबे अर्से तक पाठकों के बीच अपनी पैठ बनाई थी, कई पीढ़ियों में साहित्यिक संस्कार पैदा किए थे, हिंदी का ऐसा प्रबुद्ध पाठक वर्ग तैयार किया था जो लेखक नहीं थे, उच्च शिक्षित भी नहीं थे किंतु साहित्यानुरागी थे, अच्छे साहित्य के पठन पाठन के लिए लालायित रहते थे और जिन्होंने हिंदी साहित्य के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभाई। इन पत्रिकाओं ने नए रचनाकारों को एक मंच भी उपलब्ध कराया क्योंकि यह मान्य था कि साहित्यिक पत्रिका में रचनाओं के चयन का एकमात्र मापदंड उसकी गुणवत्ता है। साठ और सत्तर के दशक के ये लेखक ही रचनाकारों की आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शक और रोल मॉडल बने। इन पत्रिकाओं में साहित्यिकता और लोकप्रियता का विरल मिश्रण था। यही कारण था कि धर्मयुग और सारिका जैसी पत्रिकाएं ऐसे घरों के ड्राइंगरूम की शोभा बनतीं जहां के बाशिंदे रचनाकार नहीं थे पर उन्हें स्तरीय साहित्य पढ़ने की अभिरुचि थी, जो यह मानते थे कि व्यक्तित्व के विकास के लिए साहित्य का सानिध्य जरूरी है, कि अच्छी पत्रिकाएं एवं साहित्य परिवार और पीढ़ी में अच्छे संस्कार पैदा करते हैं। आठवीं, दसवीं पास महिलाएं घर के काम काज से निवृत्त होकर कुछ वक्त इन पत्रिकाओं के साथ गुजारना